VOL- VIII ISSUE- VIII AUGUST 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

एण्डन पोपॉविक तथा अनुवाद के क्षेत्र में उनका योगदान

डॉ. मोहनन वी टी वी,
शोध- निर्देशक,
हिंदी विभाग
सर सईद कॉलेज,
कण्णूर विश्वविद्यालय।

सन् 1910 से लेकर 1930 तक रूस में रीतिवाद का प्रबल अस्तित्व था। विक्टर स्लॉवस्की, यूनी टायनानॉव, व्लादिमीर प्रॉप, बॉरिस ईशनबॉम, रोमन जेकबसन, बोरिस टॉमशोवस्की, ग्रिगरी गुकोवस्की आदि विद्वानों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने साहित्य के क्षेत्र में रीतिवाद (Formalism) नामक आंदोलन चलाया। सांसारिक जीवन से अलग साहित्य का अपना अस्तित्व है। उन्होंने परंपरागत साहित्य की प्रवृत्तियों को नहीं माना और साहित्य में नयी प्रवृत्तियों को जन्म दिया। 'Formalism was, it is true, the first critical Movement in Russia which attacked In systematic fashion the problems of rhythm and meter, style and composition.'[1] जिफी लेवी (Jifi Levy), एण्टन पेपोविक (Anton Popovic) तथा डॉ. फ्रैन्टिसेक माइको (Dr. Frantisek Miko) ने रूसी रीतिवाद (Russian Formalism) से अनुवाद पद्धति की सामग्रियाँ जुटायीं। चेकॉस्लॉवाक्या (Czechoslovak) के इन तीन विद्वानों ने अनुवाद अध्ययन के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एण्टन पेपॉविक आधुनिक 'विवरणात्मक अध्ययन क्षेत्र' (descriptive translation studies) के प्रस्थापक के रूप में विख्यात है। उनका Theory of Artistic Translation अनुवाद-अध्ययन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है। सन् 1961 में उनका शोध ग्रंथ, 'Russian Literature in Slovakia' प्रकाशित हुआ। सन् 1975 से लेकर 1981 तक वे International Comparative Literature Association (ICLA) के सदस्य एवं इस संस्था के अनुवाद केन्द्र के अध्यक्ष भी थे। इस पद में उन्होंने ब्रैटिस्लावा में अनेक अनुवाद सम्मेलन चलाया। उन्होंने देश-देशान्तर में अपने व्याख्यान दिये। उन्होंने गिदेयन टूरी (Gideon Toury), इटामर इवान सोहर (Itamar Even Zohar), सूसन बैसनेट (Susan Basnett), आन्ध्रे लेफवरे (Andre Lefevare), जोस लंबार्ट (Jose Lambert) आदि से संपर्क रखा। सन् 1968 में उनका विख्यात अनुवाद ग्रंथ 'Translation and Expression' प्रकाशित हुआ। अनुवाद के महान विद्वान जेम्स हॉस (James S Homes) के साथ उन्होंने सन् 1968 में The Nature of Translation: Essays on the Theory and Practice of Literary Translation नामक निबंध- संकलन प्रकाशित किया। इस ग्रंथ में पेपोविक का लेख 'The Concept 'Shift of Expression' In Translation Studies भी सम्मिलित था। उन्होंने 'Dictionary for the Analysis of Literary Translation', 'Translation Analysis And literary History' (1968), Aspect of Metatext (1976) आदि ग्रंथ भी लिखे। रूसी रीतिवाद (Russian Formalism), चेक (Czech), पॉलिश (Polish), स्लॉवाक (Slovak), एंग्लो- सेक्सन संरचनावाद (Anglo- Saxon Structuralism), लीप्सिग अध्ययन (Leipzig School), हिडलबर्ग अध्ययन (The Heidelberg School) आदि से वे प्रभावित हैं।

जरॉस्लाव स्पेर्क अपना ग्रंथ 'Auton Popovics contribution to Translation Studies' में एण्डन पोपॉविक को उद्धृत करते हुए लिखते हैं, 'What we must be concerned with are translations as part of their home culture. It is an issue which has to do with translation in their own domestic culture and literature.'[2] उन्होंने माना है कि हर भाषा की अपनी मूल संस्कृति है जिसे अन्य भाषा में पूर्ण रूप से अनुवाद करने की कोशिश अनुवादक करता है, मगर मूल भाषा की संस्कृति पूर्ण रूप से उसे सम्मति नहीं देता है तब अनुवाद में भिन्नता आ जाती है। अनुवाद की कमी से नहीं, मूल भाषा की मूलभूत काव्यात्मकता के कारण अनुवाद में भिन्नताएँ आ जाती हैं।

पोपॉविक अपना आलेख 'The Concept 'Shift of Expression' in Translation Analysis' में उत्तम अनुवाद के गुणों के बारे में लिखते हैं, [3]

1. Stylistic Leveling (रीतिगत स्तरीकरण)
2. Stylistic Intensification (रीतिगत गहनता)
3. Stylistic Transformation (रीतिगत परिवर्तन)
4. Stylistic Substitution (रीतिगत प्रतिस्थापन)
5. Stylistic Compensation (रीतिगत क्षतिपूर्ति)
6. Stylistic Standardisation (रीतिगत मानकीकरण)
7. Stylistic Individualisation (रीतिगत व्यष्टिकरण)

उन्होंने अनुवाद अध्ययन के क्षेत्र में पहली बार 'Shift' शब्द का प्रयोग किया और उनके अध्ययन के योगदान पर चर्चा करते हुए जेरॉस्लॉव स्पेर्क मानते हैं, In translation and literary theory, three of his concepts remain inspiring to this day his early concept of 'Shift of Expression' his 'mature' theory of metatext (metacommunication) and his late modelling of the image of the world in the text. [4]

एण्डन पोपॉविक ने अनुवादक की गरिमा की घोषणा की। उन्होंने अपना क्षेत्र अनुवाद अध्ययन माना और न केवल अपना दर्शन एवं साहित्यिक चिंतन सामने रखने की कोशिश की, मगर तत्कालीन अनुवाद चिंतकों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन दिये। पोपॉविक ने अनुवाद में मूलकृति के साहित्यिक गुणों की चर्चा की और परिचर्चाएँ शुरु कीं। अनुवाद में अनुवादक की महत्ता की चर्चा करते हुए 'शिफ्ट सिद्धान्त' पर आलेख में चर्चा की। अनुवाद सिद्धान्त के इतिहास में पहली बार संस्कृति एवं साहित्यिक व्यवस्थाओं के बारे में व्याख्यान दिया। उन्होंने यह माना है कि अनुवाद में विभिन्नता आ जाती है। मगर, इस विभिन्नता का मूल कारण अनुवादक की कमी से नहीं है, मगर संस्कृति की भिन्नता के कारण है।

संदर्भ संकेत :–

1- page no. 20, Victor Elrich, Russian Formalism, Mouton Publishers, Fourth edition, 1980.
2- Page. No.7, Anton Popovic's contributions to translation studies, Jaroslav Spirk, John Benjamins Publishing Company, 2009
3- Page no. 41- 41, The concept 'Shift of Expression' in Translation Studies', ed. The nature of translation: Essays on the Theory and Practice of literary Translation', Slovak Academy of Science, 1968.
4- page no.22, Auton Popovic's contributions to translation studies , Jaroslav Spirk, John Benjamins Publishing Company, 2009.